बैंकों द्वारा मंजूर और नामंजूर किये गये आवेदनों का ब्यौरा निम्नलिखित है :—

1. शिक्षित बेरोजगार युवकों को रोजगार दिलाने की योजना (एस० ई० ई० यू० वाई०) :

क्रमांक	वर्ष	जिला उद्योग केंद्रों में प्राप्त आवेदनों की संख्या	बैंकों द्वारा स्वीकृत आवेदनों की संख्या	बैंकों द्वारा अस्वीकृत आवेदनों की संख्या
1.	1992–93	39344	10013	2987
2.	1993–94	38453	8918	7332

2. प्रधान मंत्री की रोजगार योजना (पी० ए० एम० आर० आई०) :

1.	1992–93	योजना आरंभ ही नहीं हुई थी ।		
2.	1993–94	26851	3989	431

उद्योग विहीन जिले

6988. श्री ईशदत्त यादव : क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) सरकार उद्योग विहीन जिलों के संबंध में किस आधार पर निर्णय करती है और इस संबंध में मापदंड क्या हैं ;

(ख) उन्हें किस तरह से सहायता प्रदान की जाती है ; और

(ग) पिछले दो वर्षों के दौरान सरकार द्वारा कितने उद्योग विहीन जिलों में उद्योग खोले गये हैं और इस संबंध में राज्यवार ब्यौरा क्या है ?

उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती कृष्णा साही) : (क) जिला उद्योग केन्द्र कार्य योजना, 1979–80 के अनुसार जिन जिलों में कोई बड़ा अथवा मझोला उद्योग नहीं है उन्हें "उद्योग हित जिले" के रूप में वर्गीकृत किया गया था । देश में कुल 93 जिलों को "उद्योग रहित जिले" माना गया है ।

(ख) केन्द्र सरकार उद्योग रहित जिलों में बुनियादी सुविधाओं की एक योजना चला रही थी जिसके अंतर्गत परियोजना लागत की एक तिहायी धनराशि भारत सरकार द्वारा दी जाती थी । 1988 में नयी विकास केन्द्र योजना शुरू होने से "उद्योग रहित जिलों" के लिए यह योजना समाप्त कर दी गई है ।

(ग) प्रश्न नहीं उठता ।

देश में तिलहनों की पिरायी क्षमता

6989. श्री राम जेठमलानी :
श्रीमती सुषमा स्वराज :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या पिछले वर्षों से देश में तिलहनों के पर्याप्त उत्पादन से तिलहन

पिरायी उद्योग को कच्चे माल की उपलब्धता सहज हो गयी है ;

(ख) यदि हां, तो इस संबंध में ब्यौरा क्या है और मार्च, 1994 के अंत तक देश में तिलहन पिरायी उद्योग की कुल प्रतिष्ठापित क्षमता कितनी थी ;

(ग) क्या यह सच है कि तिलहन पिरायी उद्योग में कुल पिरायी क्षमता के अभाव के कारण तिलहनों में से पूरी तरह से तेल नहीं निकाला जा रहा है ; और

(घ) यदि हां, तो अद्यतन तकनीकों का प्रयोग न करने के कारण तथा कुशलता के अभाव में देश को कितने प्रतिशत कम तेल उपलब्ध हो रहा है ?

उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती कृष्णा साही): (क) और (ख) कृषि मंत्रालय के अनुसार तिलहन की उपज वर्ष 1992-93 में 202.7 लाख मी० टन की तुलना में वर्ष 1993-94 में 218.5 लाख मी० टन होने की सम्भावना है । फिर भी तिलहन के उत्पादन में वृद्धि, देश में तिलहन पिरायी क्षमता में अनुमानित वृद्धि के अनुरूप नहीं है ।

वनस्पति तेल उद्योग का दिनांक 24-7-1991 से लाइसेंस मुक्त कर दिये जाने के कारण, तिलहन पिरायी की अधिष्ठापित क्षमता के बारे में कोई प्रमाणित जानकारी उपलब्ध नहीं है । उपलब्ध अनन्तिम सूचनाओं के अनुसार मार्च, 1994 के अन्त तक तिलहन पिरायी की कुल अनुमानित क्षमता 350 लाख मी० टन के लगभग थी ।

(ग) और (घ) आम तौर से पिरायी के बाद खली में बचा हुआ तेल 6 से 8% के बीच होता है । उपलब्धता के आधार पर खली में बचे हुए इस तेल का साल्वेंट निस्सारण किया जाता है ताकि अधिक से अधिक तेल प्राप्त किया जा सके ।

Expansion of diamond Industry

6990. SHRI AHMED MOHMEDBHAI PATEL: Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether the Diamond industry in Surat which contributes around 80 per cent of the value in the export of diamonds. is passing through a critical stage:

(b) if s, what are the main reasons for the same;

(c) whether the new technology was also introduced which resulted in the massive expansion of diamond industry at Surat:

(d) whether in view of the expansion, areas like Varachha Road, Mahida para etc. are flooded with diamond processing units;

(e) whether the largest concentration of the units and labour have caused problems like lack of sanitaiton and pollution;

(f) if so, the steps taken in the matter?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF INDUSTRY (SHRI M. ARUNACHALAM): (a) No, Sir.

(b) Does not arise.

(c) Yes, Sir.

(d) Yes, Sir.

(e) and (f) It is true that heavy contration of units and labour in certain areas of Surat city has led to problem of sanitation. There are however no problem of pollution because Diamond processing is a non-polluting industry. In recent years, some modern well design processing units have been set up in less congested areas to overcome problems arising out of concentration.